नियम डायरी

– पं. डॉ. अरूणविजय महाराज

एसो पंच णमुक्कारो

सव्वपावप्पणासणो

मंगलाणं च सव्वेसिं

पढमं हवई मंगलं

जैन श्रमण संघ के डबल M.A., Ph.D., विद्वान

पू. पंन्यासप्रवर डॉ. श्री अरुणविजयजी गणीवर्य महाराज

श्रावक जीवन में ग्रहण करने योग्य नियमोएं की

नियम डायरी

–लेखक–

पू. पंन्यास श्री अरूणविजय गणिवर्य महाराज

(राष्ट्र भाषा रत्न–वर्धा, साहित्य रत्न–प्रयाग, न्याय–दर्शनाचार्य (M.A.) बम्बई)

जन से जैन श्रावक बनने योग्य

नियम डायरी

नियम ग्रहणकर्ता. नाम : ....

पत्ता :..

....

फोन : घरः..दुकानः...............

जन्म भूमि ....उम्र..............

नियम लेने की तारीख ....

लिये हुए कुल नियमों की संख्या ....

प्रतिज्ञा दाता गुरू ....

नियम ग्राहक के हस्ताक्षर ....

नियम से नियमितता–

पं. अरूणविजय म.

वर्तमान काल भयंकर कलियुग का गिरता हुआ काल है । इसमें सात्विक्ता, बल बुद्धि, गुणवन्ता आदि घटते हैं । धर्म घटता है और अधर्म बढते है। पुण्य घटते हैं और पाप बढते हैं। ऐसे कलियुग में धर्मी आत्मा को धर्म करने की जितनी अनुकूलता नहीं रहती है उससे हजार गुनी ज्यादा अनुकूलता–सुविधा पाप करने वाले पापी को रहती है । क्यों कि चारों तरफ पाप का प्रमाण बढता ही जा रहा है । आज धर्म के नियमों को पालते हुए जीना, खाना–पीना, रहना बडा ही मुश्कील होता जा रहा है । जबकी पाप की प्रवृत्ति करते हूए पशु की तरह जीना आसान हो रहा है।

सतयुग धर्म का होता है जबकि कलियुग पाप की प्रधानता होत है । अतः कलियुग धर्म करने के लिए सुवर्ण युग नहीं हे ।

देश–क्षेत्र–काल–भावादि की सभी प्रतिकूलताएं बढती जा रही है । सुख–भोग की अतिरेकता धर्मी को भी विचलित कर दे ऐसी परिस्थिति निर्माण हो रही है । आज पापी को मित्र मिलने आसान है परन्तु धर्मी को योग्य धर्मात्मा मित्र मिलना मुश्किल लगता है । पापी को पापप्रवृत्ति में साथ–सहयोग देने वाले हजारों हैं जबकि धर्मी – धर्म प्रवृत्ति में साथ सहायोग देने वाले दुर्लभ होते जा रहे है । परिणामतः पापी के घर लीला लहेर हो रही है और धर्मी के घर धाड पड रही है ।

फिर भी ऐसे कलियुग में निराश होकर धर्म छोडना नहीं हे। अब आगे ज्यादा अच्छा काल आने की संभावना नहींवत् है । प्रतिकूलता में अडिग रह कर धर्म करता ज्यादा लाभप्रद है । निराश होकर कालादि की प्रतिकूलता को देखकर धर्म छोड देने वाला कायर माना जाता है । उसकी श्रद्धा कच्ची है । इस प्रकार की अश्रद्धा और अपरिपक्वता में हमें नहीं जाना है।

श्री वीर प्रभु का शास्न २९००० वर्ष चलने वाला है । अभी तो सिर्फ ढाई हजार वर्ष ही बीते है । अभी ९ ५०० वर्ष और शासन चलेगा। वह धर्म करने वाले धर्मात्माओं से ही चलेगा धर्म करते रहने से ही धर्म टिकाता है । धर्मस्थान तो बनते हैं और धराशायी भी हो जाते हैं लेकिन धर्म

करने वाले धर्मी से धर्म सही अर्थ में टिकेगा । धर्मी दो दिशा में आगे बढता हे । एक तो पापों की प्रवृत्ति से निवृत्ति लेनी चाहिए और दूसरी तरफ धर्माराधना मे करने योग्य आजा प्रधान प्रवृत्ति करनी चाहिए । अतः प्रवृत्ति–निवृत्ति प्रधान जीवन बनना चाहिए । पाप की निवृत्ति और धर्म की प्रवृत्ति । धर्म कितना किया? इसके बजाय पाप कितने छोडे? यह ज्यादा महत्वपूर्ण है । यदि पाप न छोडते हुए धर्म करते भी जाए तो आगे धर्म की अवहेलना–निंदा होगी । इसलिए पाप को छोडकर शुद्ध बनकर धर्म करने से धर्म भी शुद्ध होता है। ज्यादा आनन्द आता है और सही अर्थ में धर्म होता है और दूसरे भी धर्म पाते हैं । नहीं तो थोडे से पाप से ज्यादा धर्म भी निंदा के पात्र बनता है । अतः पापों को पहले तिलांजाली देनी चाहिए।

पाप प्रवृत्ति अशुभ कर्मों का बंधन कराती है । और बंध हूए कर्म उदय में आने पर जीवन दु:खी दु:खी बन जाता है । अतः दु:ख का कारण ईश्वरादि कोई नहीं है सिर्फ अपने किये हुए पाप कर्म ही है । अतः पुराने पाप कर्मों के कारण जो आज दु:ख भोग रहे है यह प्रत्यक्ष प्रमाण देखकर अब आगे ज्यादा पाप न करें यही आत्म जागृति का सच्चा प्रतीक रहेगा । यदि पाप प्रवृत्ति चलती ही रही तो फिर से पाप की प्रवृत्ति और फिर से कर्म का बंध, फिर से कर्म के उदय से दु:ख की प्राप्ति, फिर दु:ख में पाप की प्रवृत्ति–फिर कर्म–फिर उदय में दु:ख और फिर पाप प्रवृत्ति............ इस तरह अनादि अनन्त–काल तक संसार चक्र चलता ही रहा तो आत्मा कभी भी मुक्त नहीं बन

सकेगी । यह विषचक्र चलता ही रहेगा । अतः सबसे पहले पापप्रवृत्ति को बंद करना यही श्रेष्ठ उपाय है।

परमात्म ने नौं तत्वों में संवर तत्व को भी बताया है । संवर पाप के आगमन को रोकने वाला है । आश्रव निरोधो संवर । धर्म संवर प्रधान है । निर्जरा परिणामक है । पाप न करने की प्रतिज्ञा को संवर की साधाना कहते हैं । संवर की साधाना व्रत नियाम–पच्चक्खाण स्वरूप होती है ।

नियम लेना क्यों जरूरी है?–

मानव में अहंकार की मात्रा ज्यादा रहती है । अतः अभिमान से उपने आपको बडा मानकर चलता है । बडप्पन में मुझे कहने वाला कोई नहीं है । इस विचारों से मन निरंकुश– अंकुश रहित बन

जाता है । स्वच्छंद बन जाता है । ऐसी व्यक्ति कितने भी पाप करे उसे कोई वाला नहीं रहता है । इसलिए कई ज्यादा पाप कारते रहता है । पाप प्रवृत्ति में क्षणिक मजा है इसकी ओर ही मन आकृष्ट रहता है । लेकिन उसे यह पता नहीं है कि क्षणिक मजा के पीछे नरकादि के दुःखों की लाखों वर्षों की बडी भारी सजा छिपी हूई है । ऐसी सजा भुगतने के दिन आएंगे तब रो रो कर भुगतनी पडेगी। पापों की सजी बडी भारी होती है ।

अब इससे बचा कैसे जाय? एक ही उपाय है–व्रत–नियम अंगीकार करके पाप प्रवृत्ति का त्याग करना।

बिना अंकुश का हाथी घोडा भारी अनर्थ कर सकता है । अंकुश बिना स्त्री प्रत्रादि स्वच्छंद

बनकर ७ पीढि की इज्जत धुल में मिला देते हैं । इसलिए सर्वत्र अंकुश की पूरी आवस्यकता है । छोटे–बडे सभी पर अंकुश जरूरी है । उपने ही मन पर अपने व्रत–नियम का स्वेच्छिक अंकुश ही ज्यादा अच्छा है । किसी प्रकार का पाप न करने की प्रतिज्ञा ही नियम कहलाता है । अष्टांग योग के क्रम में यम–नियम पहले आते हैं । इस क्रम का उल्लंघन करके आगे जानेवाला पतन होने के बाद पछताता है । जबकि नियम पूर्वक आगे ध्यान में जाना बहुत ही सरल–सूगम है ।

वर्तमान काल में जीवन अनियमित है । अनियमित जीवन को अस्त–व्यस्त अव्यवस्तित बना देती है । अतः नियम जीवन को नियमित सुव्यवस्तित बनाता है । नियम पाप प्रवृत्ति से बचाकर–पशुता

से बचाकर नियमितता की तरक अग्रसर करता है । नियम पापों से रक्षा करता है । बस नियम का ही स्वैच्छिक अंकुश बहुत ही सरल रहता है । नियम पालने में सिर्फ अपने मनोबल की ही अवस्यकता रहती है । यदि अपना मन पक्का – मजबूत है तो कठीन से कठिन नियम भी आसानी पूर्वक पल सकता है । यदि मन कमजोर है तो सादा – सरल नियम भी पलना बडा मूश्किल रहता है । कमजोर मनवाले जन्दी गिरते हैं ।

विशेष स्पष्टीकरण–

नियम के विषय में घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है । यदि आपके मन में भय है कि नियम कभी टूट जाएगा तो बहुत ज्यादा पाप लगेगा । ऐसी बात नहीं है । सावधानि रखने के

बावजूद भी कभी भूल से अन्जान में नियम टूट भी गया तो कोई ज्यादा बडा पाप नहीं लगता है । परन्तु नियम न लेने वाले को तो हमेशा ही पाप लगता रहता है । उदाः के लिए समझें कि – कोई २०% पाप दोष लगा । और वह भी योग्य समय पर गुरू महाराज मिलने पर – पाप प्रकट करके स्वीकार करके जिये गए प्रायश्चित के अनुसार करके पाप धोया भी जा सकता है । फिर नियम तो अखंड ही रहेगा । लेकिन सर्वथा पाप कर्म के दोष से भारी बनती जाएगा । इसलिए टूट जाएगा ऐसी डर से, या कमजोर मन से नियम न लेना ही अच्छी है ऐसे निर्बल विचार न करें । अविरति से विरति में आने का विचार करना ही चाहिए । अव्रती से व्रती बनना और जन से जैन बनने की दिशा में व्रत–नियम बहुत ही आवश्यक है ।

कई ऐसा कहाते हैं कि – हम नियम ग्रहण नहीं करेंगे परन्तु मन से पालने की कोशीष करेंगे। यहां मन की कमजोरी साफ दिखाई देती है । अतः परिपक्व पूरे दृढ मन के विचारों पूर्वक पालन न किया जाय तो पूरा लाभ नहीं मिलता है । इसलिए यदि पालने की ईच्छी रखते ही है तो फिर दृढाता पूर्वक नियम ग्रहण करके ही पालना लाभ दायक है।

नियम सिर्फ देव–गुरू–आत्मसाक्षी की प्रा–धान्यता पूर्वक होता है । जिससे देव–गुरू–आत्मा की तरफ लक्ष रहे । आत्म–जागृति बनी रहे । पापभीरूता बनी रहे । आत्म विकास की दिशा में आग्रसर होना है अतः श्रद्धा या गुणस्थानक चौथा है जबकि व्रत नियम ग्रहण करने वाला व्रती – १ गुणस्थानक आगे पांचवे देशविरति गुणस्थानक पर

पहुंचना है । आत्मा का विकास होता है । इस तरह मोक्षामार्ग पर अग्रसर होते रहेंगे।

प्रस्तुत पुस्तिका में जीवन को स्पर्शते अनेक छोटे–छोटे नियमों का संग्रह किया गया है । जो दो विभाग में विभाजित किये जा सकते हैं । १.) एक में क्या–क्या करना चाहिए । और २.) दूसरे विभाग में क्या–क्या नहीं करना चाहिए? इस तरह विशेष ध्यान रख छोटे छोटे नियमों को बनाया है । जिससे याद रहने में भी शुविधा रहे । सरल – सादी भाषा में आबाल–गोपाल सभी समझ सके इस पद्धति से यह लधु संस्करण प्रकाशित किया है । यह लघु पुस्तिका जेब में, यात्रा–प्रवासादि में साथ में रखने की पूरी सूविधा रहेगी।

साधक–आराधक वर्ग को चाहिए कि वे प्रति सप्ताह में १ बार तो कम से कम अपने ग्रहण किये हूए नियमों को पढें । १ बार पूरी पुस्तिका की आवृत्ति करें । ताकि स्मृति पटल पर नियम ताजे बने रहेंगे । याद आते रहेंगे । जिससे भूल होने की संभावना नहीं रहेगी । इस पुस्तिका को पढने पर आपको लगेगा कि कई नियम तो बैसे भी पालते हैं । तो फिर व्रत–नियम–ग्रहण करके क्यों न पूरा लाभ उठाएं । अतः पढने पर जरूर मन हो जाएगा । जितने ज्यादा पापों से बचेंगे उतना ज्यादा जीवान शुद्ध–पवित्र बनेगा । कल्याण होगा।

सभी आत्माएं पापों से बचकर आत्म कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो इसी शुभ कामना के साथ

––– अरुणविजय

नियम विषयक संकल्प–प्रतिज्ञा

अरिहंत परमात्मा की साक्षी में, सिद्ध भगवंतो की साक्षी में, साधु भगवंतों की साक्षी में, गुरू महाराज की साक्षी में, देवी–देवताओं की साक्षी में स्वगुरू की साक्षी में एवं अपनी आत्मा की साक्षी में........

अमुक पाप न करने की .... और अमुक प्रकार का धर्म करने की .... देश–क्षेत्र–काल–भाव की अपेक्षा से भीस्म प्रतिजा करता हूं । संकल्प करता हूं कि आगे फिर कभी यह–ऐसा पाप दूसरी बार नहीं करूंगा । ढ मनोबल की धारणा पूर्वक प्रतिजा करके यह नियम में ग्रहण करता हूं । उपरोक्त साक्षी भाव से लेता हुं और पक्के मनोबल से ढता पूर्वक पालन करूंगा । प्राणों के जितनी ही नियमों की रक्षा करूंगा । प्रतिकूल संयोगो में भी नियम का पालन करूंगा।

नियम ग्रहणार्थ विशेष समझ ---

१.) सर्व प्रथम शान्त चित्त से पूरी डायरी एक - दो बार पढीए । आगे की प्रस्तावना पढीए । फिर विचार करीए कि मैं कितने नियम आसानी से ले सकता हूं? पालन कर सकता हूं ? उन उन नियमों के आगे राईट की निशानी किजीए । ताकि वह नियम आप ले रहे हैं । आपके लिए पक्का हो जाएगा।

२.) सामने दूसरा पेज खाली है । उसमें दो विभाग रखें हैं । एक तरफ कालमर्यादा है । दूसरी तरफ "नियम में छूट" लिखा हूआ है । कालमर्यादा के विभाग में उस नियम को आप कितने वर्षों के लिये ले रहे हैं उसकी शंख्या लिखें । कोई नियम ५ वर्ष, १० वर्ष के लिए ले रहे हों

तो वहां १० वर्ष लिखें । कई नियम एसे हैं जिसे आप जिन्दगी भर तक पाल सकते हैं । उदाः ''मांसाहार का त्याग" आप जैन है अतः आपको यह नियम जीवन भर के लिए लेना ही चाहिए । अतः कालमर्यादा विभाग में ''आजीवन'' या ''जीवन भर लिखें''।

३.) दूसरी तरफ का विभाग ''छूट'' का है । लिये हूए नियम में महीने में, वर्ष में कितने दिन की छूट रखनी है ? उतने दिनों की संख्या लिखें । जैसे ''रात्री भोजन का त्याग'' इस नियम में महीने में २ दिन की छूट । तो वहां ''२ दिन'' लिखें । अतः आप माहीने के २५ दिन रात्री भोजन का त्याग रखेंगे । लेकिन संयोग परिस्थिति वशात २ दिन नहीं भी पला तो कोई दोष नहीं लगेगा ।

लेकिन मांसाहार आदि के त्याग का नियम आप ले रहे हैं तो उसमें छूट नहीं रखी जा सकती है । अतः ऐसे नियमों में बिल्कुल छूट नहीं यह स्पष्ट लिखें।

४.) कभी भी भूल से अन्जान में, या उतावलेपन में कोई नियम छूट भी जाय, भूल हो भी जाय तो याद करके नियम डायरी के पीछे के पत्ते जो भूल लिखने के रखे गये हैं उसमें तारीख–वार के साथ अवश्य लिखें।

४.) जब भी जानी – गीतीर्थ गुरू भगवंतो का योग प्राप्त हो जाए तब यह डायरी पूज्यश्री को दिखाते हूए अपनी भूल के बारे में स्पष्ट करते हूए, भूल के स्वीकारए करार पूर्वक प्रायश्चित के लिए विनंति करें । गुरू महाराज जो भी प्रायाश्चित

फरमाएं उसे स्वीकार करके यथाशीघ्र पूर्ण करें । पश्चाताप के भाव को बनाए रखें । जीवान पावन–पवित्र बनाएं । आत्म कल्याण साधों ।

––– **अरूणविजय**

रोज १४ नियम धारने की रीत

१. सचित्त, २. दव्व, ३. विगई, ४. वाणह, ५. तंबोल, ६. वत्थ, ७. कुसुमेसु, ८. वाहण, ९. सयण, १०. विलेवण, ११. वंभ, १२. दिसि, १३. न्हाण, १४. भन्तेसु ॥

(इस श्लेक को याद–पाठ कर लेने से धारने में बडी आसानि रहेगी । धारणा करके फिर पच्चक्खाण लें ।)

श्लोक सहित इस का अर्थ निम्नलिखित है ।–

१. सचित्त – सजीव वनस्पति, कच्चा पानी आदि ।

२. द्रव्य – मूंह में खाने योग्य खाने–पीने की वस्तुएं ।

३. विगई – १– दूध, २– दही, ३. घी, ४. तेल, ५. तली हूई एवं ६. मीठीई इन छः विग इयों में से यथा शक्य समझाकर इच्छानुसार त्याग करें ।

४. वाणाह – बूट–चप्पल–स्लीपरादि।
५. तंबोल – पान–सुपारी–मुखवासादि।
६. वस्त्र – धोती–खेस–पेन्ट–शर्ट–पायजामा–झब्बा टोपी–पघडी–रूमाल–नेपकिनादि कितनी जोडी पहनना (इसी तरह स्त्रीयों के लिए साडी आदि बस्त्र समझना) प्रमाण धारें।
७. कुसुम – फुल–अन्तर–तेल आदि सुंघने योग्य सुगंधी वस्तु आदि।
८. वाहन – गाडी, घोडागाडी, बैलगाडी, कार, बस, रेल, प्लेन, जहाज आदि।
९. शयन – शयन, गादी, खूर्सी, पलंग, बिस्तर आदि सोने बैठने योग्य साधन सामाग्री।
१०. बिलेपन – तेल, साबुन, बाम आदि मालिश करने, लगाने आदि के लेप, तेल आदि साधन।

११. ब्रह्मचर्य – शारीरिक मैथून–आलिंगनादि का त्याग ।

१२. दिशी – पूर्व–पश्चिमादि दिशाओं में जाने आनेके प्रमाण को धारना ।

१३. न्हाण – स्नान करना, कपडे धोना आदि ।

१४. भन्त–भोजन–पानी, खाने–पीने की वस्तुएं ।

उपरोक्त १४ नियम सुबह०शाम–अपने उपयोग के आधार पर धारने एवं संक्षेप करना । जो नियम संख्या, बजन, माप आदि प्रमाणों से धारे जाते हैं । निम्न कोष्ठकानुसार धारणा करें ।

नाम		धारा हूआ प्रमाण	उपयोग मे आया	लाभ रहा	जयणा रखी
१.	सचित्त	१०	५	५	सली की जयाणा
२.	द्रव्य	२५	२०	५	स्पर्श की जयाणा
३.	विगई	५ (१ त्याग)	३	२	
४.	वाणह				
५.	तंबोल				
६.	वस्त्र				
७.	कुसुम				
८.	वाहन				
९.	शयान				
१०.	विलेपन				
११.	ब्रह्मचर्य				
१२.	दिशा				
१३.	न्हाण				
१४.	भत्त				

११ अभक्ष्यों के नाम ---

१. उदुंबर वृक्ष के फल
२. वटवृक्ष के फल (टेटा)
३. पीपल के फल
४. प्लक्ष पीपल
५. कालुम्बर फल
६. किसी भी प्रकार का मांस
७. मदिरा – शराब
८. मध
९. मक्खन –
१०. बरफ–आइस
११. विष–झहर
१२. हिम – करा
१३. कच्ची मिी
१४. रात्री भोजन
१५. बहुबीज फल
१६. अन्नाजमिश्रित या फल वाले कच्चे अचार
१७. द्विदल
१८. रींगणां – बैंगन
१९. अन्जाने फल
२०. तुच्छफल रायणादि
२१. चलितरस
२३. अनन्त काय

३२ अनन्त काय

१. सूरणादि सब जाति के कंद
२. वज्र कंद
३. हल्दी जब नरम ताजी हो
४. आदु–अदरक
५. कजूरा–जब ताजा हरा हो
६. शतावरी वेल सहित
७. बटाटा–आलु (पिंडालु)
८. लहसून
९. हीरली कंद (विराली–सोफाली)
१०. कुंवार पाठा
११. थोर के झाड–पानादि
१२. गलो (गुलवेल)
१३. शकरकद (शकरिया)
१४. वंशकारेले
१५. गाजर
१६. लूणी / लवणक

१७. लोढी (लोढक)
१८. गिरिकर्णिका (गरमर)
१९. किसलय / कोमल पत्ते
२०. खरसैय (खीरसुआकंद)
२१. थेग की भाजी
२२. हरि मोथ
२३. लोण वृक्ष की छाल
२४. खीलोडा कंद
२५. अमृतवेली
२६. मुला (पांच ही अंग)
२७. मशरूम
२८. नए अंकुर (अंकुरित कठोलादि)
२९. वत्थूला की भाजी
३०. शूकरवल्ली
३१. पालक की भाजी
३२. कोमल इमली

ग्रहण करने योग्य लाभकारी नियम

१. सूर्योदय से ३ या ४ घडी पहले उठना ।

२. उठने ही बिस्तर में नवकार तथा २४ भगवान का स्मरण करना ।

३. प्रतिदिन सुबह – शाम मंदिर में प्रभु दर्शन करना ।

४. प्रतिदिन मां – बाप – दादा – दादी के चरण स्पर्श – प्रणाम करना ।

५. प्रतिदिन गुरु महाराज को (न हो तो फोटो अथवा मूर्ति को) वंदन करना ।

६. प्रतिदिन जिन पूजा / अष्टप्रकारी पूजा भक्तिभाव से करना ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

७. प्रतिदिन सुंदर आंगी (अंगरचना) करनी ।

८. प्रतिदिन स्न्नात्र पूजा पढानी ।

९. मंगल प्रभात में सुंदर प्रार्थना करनी ।

१०. प्रतिदिन "रत्नाकर पच्चीशी" का
पश्चाताप के भावपूर्वक पाठ करना ।

११. राईय – या / देवसीय या दोनों
प्रतिक्रमण रोज / ५–३० तिथि करना ।

१२. रोज १, २, ३, ४ अथव ५ या १०
सामायिक पूरे दिन – रात में करनी ।

१३. या प्रति सप्ताह / या माहीने में ५, ३०,
१५, २०, २५, ३०, सामायिक कुल करनी।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१४. प्रतिदिन १, २, ३, ४, ५, या १० नवकार मंत्र की माला गिननी ।

१५. "नमो अरिहंताणं" आदि किसी भी १ पद की कच्ची ५, १०, २० माला गिननी।

१६. रोज १, २, ५ या १० धार्मिक सूत्रों की नई गाथाएं पाठ करनी ।

१७. रोज १, २ प्रतिदिन स्तवन / सज्झाय / स्तुति आदि नई पाठ करनी ।

१८. रोज सम्यगु जान आराधनार्भ ५३ खमासमणे देने / ५१ लोगस्स का काउस्सग्ग करना ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१९. चारित्र प्राप्त्यर्थ रोज .... लोगस्स का काउस्सग्ग करना ।

२०. प्रतिदिन जिन शासन आरधनार्थ / रक्षार्थे .... लोगस्स का काउस्सग्ग करना ।

२१. अष्टकर्म क्षयार्थ रोज ५, १०, २० अथवा १०० लोगस्स का काउस्सग्ग करना ।

२२. नवपद आराधनार्थ नवपदजी का काउस्सग्ग करना ।

२३. श्री नमस्कार महामंत्र का अष्टदल कमलबद्ध ध्यान करना ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२४. आत्म चिंतन, तथा स्वरूप दर्शन का रोज ध्यान करना ।

२५. नियमित योगासन, प्राणयामादि का अभ्यास करना ।

२६. अरिहंत / सिद्धि परमात्मा का ध्यान / चिन्तन / जापादि करना ।

२७. रोज अनानुपूर्वी गिनते हुए नवकार मंत्र का स्मरण करना ।

२८. रोज ५०० / १००० य २००० गाथा प्रमाण स्वाध्याय करना ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२९. नियमित प्रकरण / भाष्य / कर्मग्रन्थ / तत्त्वार्थादि सूत्रों का अर्थसहित / भावार्थ चिन्तन पूर्वक स्वाध्याय करना ।

३०. प्रतिदिन आधा १ या २ घण्टे धार्मिक पुस्तकों का वांचन करना ।

३१. धार्मिक पुस्तकों पढना / दूसरो को पढाना / घर में संग्रह करना ।

३२. प्रतिदिन १ या २ घण्टे संपूर्ण मौन पालन करना ।

३३. अश्लील, कमोत्तेजक, साहित्य, कामवर्धक, उत्तेजक मेगेझिन आदि न पढें।

कालमर्यादा	नियम में छूट

३४. महिने में ५, १०, या १२ पर्वतिथि बियासणा / एकासणा आयंबिल / उपवासादि की तपरचर्या करनी ।

३५. माहिने में ५, १०, या १२ पर्व तिथि लीलोतरी–हरीवनस्पति का त्याग करना ।

३६. हमेशा / आजीवन या ५, १० तिथि, पर्वों में उबाला हुआ गरम पानी पीना ।

३७. प्रतिदिन सुबह नवकारशी / पोरिसी / साढ पोरिसी का पच्चक्खाण करना ।

३८. प्रतिदिन रात को तिविहार / च उविहार/ पाणहार का पच्चक्खाण करना ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

३९. रात्री भोजन का आजीवन / या पर्वतिथि / या माहिने में, ५, १० दिन त्याग करना ।

४०. पक्खी / चौमाशी / संवत्सरी आदि बडे पर्वों के प्रतिक्रमण अवश्य करना ।

४१. नियमित मुी सहिअं / गंठी साहिअं के पच्चक्खाण करना ।

४२. प्रत्येक महिने में १ या अधिक आयंबिल करना ।

४३. ज्ञानपंचमी, मौन एकादशी/पोष दशमी / आदि वार्षिक पर्वों की आराधना करनी ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

४४. नवपदजी की ओली / वर्द्धमान तप की ओली आदि ओलीयां १, २, ३, ४, ५ यथाशक्ति आयंबिल की ओली करनी ।

४५. शीताला सातम / होली / बलेव आदि मिथ्यामति मान्य तपादि न करने / न मनाने ।

४६. सोमवार / शुक्रवार आदि के अन्य धर्मी व्रतादि न करना ।

४७. कल के वासी आहार आदि न खान / खिलाना ।

४८. होटल / बजार / रेकडी आदि रास्ते पर के खाद्य पदार्थों का भक्षण न करना ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

४९. चरबी में तले हूए वेफर, चीवडा, भजीए, पकोडे, पूडी आदि बहार के नमकीन न खाएं ।

५०. मांसाहारी / शाकाहारी होटल / रेस्टारन्ट में पैर भी न रखें / न खाएं ।

५१. फाइवस्टार, थ्रीस्टार आदि होटलों में कभी भी न जाएं ।

५२. कच्चे दुध–दहीं के साथ कठोल की चीजें न खाएं । द्विदल (विदल) बनते हैं । असंख्य जीव मरते हैं ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

५३. तीर्थस्थानों में यात्रा के समय रात्री–
भोजन एवं रास्ते पर का खाने का
सर्वथा बन्द रखें ।

५४. बरफ/आइस्क्रीम/अंडे के रसवाली
आइस्क्रीम आदि तथा बरफ की बनी
चीजें गोला, कुल्फी आदि सर्वथा न खाएं ।

५५. आलू (बटाटा) लसण, गाजर, मूला,
शकरकंद, आदु (अदरक) प्याज (कांदा)
आदि अनन्तकाय का भक्षाण न करें ।

५६. कच्चे पानी में भिगोकर रखे हुए चने,
मुंगादि अंकुरिअत कठोल अनन्तकाय होने
से कभी भी न खाएं ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

५७. वड के फल (टेटा), उदुम्बर फल आदि पांच उदुम्बर फल न खाएं ।

५८. मध किसी भी प्रकार का हो असंख्य जीव हिंसा जन्य होने से न खाएं ।

५९. मांस / मांसरस / मांस की बनी हुई खाद्य सामग्री सर्वथा न खाएं ।

६०. मक्खन (बटर) असंख्य जीवमयपिण्ड होने से न खाएं ।

६१. देशी / विदेशी शराब, दारू, ब्रान्डी, वाइन आदि किसी भि प्रकार की मदिरा का सर्वथा त्यागा करें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

६२. बीडी / सिगरेट / ब्राउन सुगर आदि नशीले धूम्रपान का त्याग करें ।

६३. गांजा / चरस / अफीम / आदि नशीले जहर तथा उनसे बनी कोई भी वस्तु सर्वथा त्याग करें ।

६४. पान पराग, मावा, जर्दा, तम्बाकु एवं उनकी बनी हूई वस्तुओं का त्याग करें । तपकीर / छींकणी सूंघना भी त्याग करें ।

६५. नशा चढाने वाले पान / सादे पान / मसाले वाले पान सर्वथा न खाएं ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

६६. सुपारी केन्सर सहायक एवं विद्यानाशक होने से त्याग करें ।

६७. नशाकारी / कामोत्त्तेजक / विकार वर्धक / औषधियां कभी भी न लें ।

६८. दुध, दहीं, घी, तेल, तले हुए नमकीन–फरसाणदि एवं शक्कर मीठाई आदि ६ विगई सभी या कम ज्यादा हमेशा के लिए या प्रतिदिन १–१ इस तरह त्याग करें ।

६९. आर्द्रा नक्षत्र बैठने के बाद आम (केरी) खाना बन्द करें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

७०. बोल आचार, अनाज–कठोल वाले आचार, बजार के आचार न खाएं ।

७१. तुच्छफल / अन्जान फल / एवं बहुबीजवाले फल एवं विषैले किंपकादि फल सर्वथा त्याग करें ।

७२. चलितरस वाले सडे गले हुए फल–तरकारियां आदि न खाएं ।

७३. पशु चरबी से मिश्रित घी–तेल डालडा आदि का त्याग करें ।

७४. स्नान के या कपडे धोने के चरबीवाले साबुन सर्वथा न वापरें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

७५. कोलगेट आदि पेस्ट हड्डी के चूर्ण से मिश्रित होने से त्यागा करें।

७६. देवी–देवता–तथा अन्य मंदिरों के प्रसाद–जलदि न खाएं।

७७. भोजन करते समय दूसरों के साथ एक थाली में इके न बैठें।

७८. भोजन में अंश मात्र भी झूठा न डालें / थाली धोकर पीएं।

७९. भोजन करते हुए झूठे मुंह नहीं बोलना मौन पूर्वक खाएं।

कालमर्यादा	नियम में छूट

८०. भौजन स्वाद रहित या ज्यादा निमकादि डाला हुआ आ भी जाय तो भी मुंह न बिगाडें, क्रोध न करें, गाली आदि न दें, वस्तु न फेंके ।

८१. कभी कभी, या रोज किसी को खिलाकर बाद में खाएं ।

८२. दीन–दुःखी, भिखारी, गरीभ आदि को अनुकम्पा की दयाबुद्धी से यथाशक्ति दान दें । (पैसे के बदले खाने की चीज) खिलाना अच्छा है ।

८३. प्याए को पानी, भूखे को भोजन देने का रखें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

८४. धन की ही आवश्यकता वाले को धन, और वस्त्र की जरूरियात वाले को कपडे आदि यथोचित दें ।

८५. औष्ध – दवाई, आदि की आवश्यकता वाले मरीजों को दवाई (निर्दोष) देवें ।

८६. किसी का औपरेशन – आदि चिकित्सा कराने में सहायक बनें ।

८७. जीवदया के क्षेत्र में यथाशक्ति धन–दान करें ।

८८. गाय–भेंस–बकरे आदि जीवों को बचाने–रक्षा करने में तन–मन–धन का भोग देने के रखें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

८९. पशुओं को रोज / या कभी कभी चारा पानी घासादि दें ।

९०. कबुतरादि पक्षियों को अनाजादि डालें ।

९१. पक्षि पालने का शौक न रखें । पिंजरे में बांधकर न रखें ।

९२. कुत्ते पालाना नहीं, बांधकर रखना नहीं, कुतों को अण्डे– मांस मिश्रित आहार न खिलावें ।

९३. पिंजरे में बंदिस्थ पक्षियों को छोड कर बचाएं ।

९४. गिलोल, तीरादि से पशु–पक्षियों का शिकारादि न करें / न खाएं ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

९५. कतलखाने जाते हुए गाय–भेंस–बिकारी आदि पशुओं को साम–दाम–दण्ड–भेद नीति से धनादि से भी बचाना ।

९६. **ANIMAL PRODUCT** जानवरों के अंगो से निर्मित चीजें न वापरें ।

९७. मौज शौक के खातिर भी प्राणीजन्य वस्तुओं को न वापरें, पर्स पाकिट, कोटादि ।

९८. सौंदर्य प्रसाधनों में लिप्स्टिक–पाउडरादि प्राणिजन्य वस्तुओं न वापरें ।

९९. अण्डे के रस से बने हुए हेयर शेम्पु आदि न वापरें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१००. हाथी दंत की बनी हुई कोई भी चीज मुर्ती आदि भी सर्वथा न वापरें ।

१०१. सधु–साध्वीयों को सुपात्र दान के रुप में वस्त्र–पात्रादि बहेराने ।

१०२. प्रतिदिन / साधु साध्वीयों को गोचरी–पानी बहेरावें ।

१०३. वडील / पूज्य / गुरू भगवंत एवं साधर्मिकों की सेवा–वैयावच्च–भक्ति करें ।

१०४. स्वधार्मी – साधर्मिक बंधुओं के उत्कर्ष में यथाशक्ति लक्ष्मी वापरें ।

१०५. प्रतिवर्ष २–५ सीदाते हूए साधर्मिक परिवारों को दत्तक लेकर उद्धार करें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१०६. ५–१०–२० विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता हेतु ''छात्र वृत्ति'', शिष्यवृत्ति SCHOLAR SHIP देने का रखें ।

१०७. बारहव्रतधारी / चतुर्थ व्रतधारी श्रावक–श्राविकाओं का प्रतिवर्ष बहुमान – सम्मान करें ।

१०८. MEDICAL CAMP आदि के माध्याम से मानव सेवा के काम करें ।

१०९. व्यापार–व्यावसाय में न्याय – नीति का पालन करें ।

११०. स्वाशक्ति एवं स्वद्रव्य से जिनमंदिर – उपाश्रयादि बंधावें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१११. निर्माणाधीन जिनमंदिर – उपश्रयादि में यथाशक्ति लक्ष्मी वापरना ।

११२. पानी की व्याउ खोलना / बंधाना / चलाना ।

११३. चारित्र प्राप्ति हेतु प्रतिदिन के भोजन में से किसी भी एक प्रिय वस्तु का / १ विगई का / १ मीठाई का त्याग करना ।

११४. चारित्र प्राप्ति हेतु हंमेशा के लिए १ रोटी लूखी खाना ।

११५. पर्वतिथियों में / बडे पर्वों में / चातुर्मास में ब्रह्मचर्य पालना ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

११६. अपने वैभव का प्रदर्शन करने हेतु–
(दिखावा करने के लिए) धर्म के
सिद्धातों का भोग नहीं लेना ।

११७. प्राचीन जिनमंदिर / तीर्थ आदि का
जीर्णोद्धार कराना / करवाना /
जिम्मेदारी उठाना / सहायता करना ।

११८. जिनागम शास्त्र–ग्रन्थ लिखाना /
छपवाना / या उसमें दान देना ।

११९. वितरागी अरिहंत भगवान,
पंचमहाव्रती साधु, केवली प्ररूपित
धर्म को ही मानना – आचरना ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१२०. मिथ्थात्बी, रागी–द्वेषी देव, देवीयों, बावा–फकीर–मौलवी–पीर आदि गुरूओं एवं अन्य धर्मोंको मानना–आचरना नहीं ।

१२१. रोग निवृति, संतान–प्राप्ति, धन लाभ, दुःख नाशादि एवं लोभजन्य धारणा–ईच्छा फलीभूत करने हेतु मानता, आखडी, बाधा, आदि न रखनी, न माननी, इसके लिए मंत्र जाप–तपादि न करना ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१२२. पालीताणा–सम्मेतशिखरजी आदि तीर्थों की यात्रा करते समय–चढते समय ट्रान्झिस्टर आदि न बजाएं / कोमोन्ट्री–संगीत न सूनें / बीडी/सिगरेट न पिएं / पान–मावा–मसालदि खाते–पीते न चढें ।

१२३. पालीताणा पवित्र तीर्थ पर दहीं आदि न खाएं / पिशाब–शौच न करें ।

१२४. तीर्थ भूमि में धर्मशाला आदि में पत्ते न खेलें / पैसे से भी न खेलें । अश्लील आहित्य न ले जाएं / न पढें / न खरीदें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१२५. घुमने–फिरने या पिकनिक के हेतु से तीर्थयात्रा न करें ।

१२६. प्रतिवर्ष १–२ या ४–५ बार तीर्थ यात्रा करने जाएं ।

१२७. प्रतिवर्ष ५–१०–२०–३० तीर्थों की यात्रा करें ।

१२८. प्रतिवर्ष १–२ आर्थिक अशक्त स्वधर्मी साधर्मिक बंधुओं / परिवारों को तीर्थ यात्राएं करवाएं ।

१२९. तीर्थस्थानों में अभक्ष्य का त्याग, रात्री भोजन का सेवन न करें, रास्ते पर की वस्तुओं ने खाएं, व्यसनों का सेवन न करें।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१३०. तीर्थभूमियों में कम से कम बियासणा / एकासणा / आयंबिल / उपवास / छ / अमादि के पच्चक्खाण से तप करते हुए यात्रा करें ।

१३१. लांच–रिस्वत न खाएं / न दूसरों को देवें ।

१३२. दाणचोरी स्मुग्लिन्ग न करें / न करवाएं ।

१३३. जीवन के ४० या ५० वर्ष के बाद संपूर्ण अखंड ब्रह्मचर्य व्रत पालों ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१३४. परस्त्री, विधवा, कन्या आदि के साथ कभी भी शारीरिक संबंध न करें ।

१३५. वेश्यागमन, कॅल गर्ल, आदि का संबंध आजीवन त्यागें ।

१३६. "स्वपत्नी" (स्व पति) के सिवाय अन्य किसी के भी साथ जीवन भर में कभी भी शरीर संबंध न करें, अन्य को मा–बहन माने ।

१३७. स्कूल, कोलेज के शिक्षा जीवन काल में संपूर्ण शुद्ध ब्रह्मचर्य पालें ।

१३८. अपने ही धर्म में, जाति में, समाज में योग्य रीति रिवाज से ही शादि करें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१३९. पर धर्म / पर–देश / पर जाती / पर समाज / पर भाषी के साथ कभी भी शादि न करें ।

१४०. माता पितादि पूरे परिवार की सम्मति पूर्वक योग्य सगाई–शादी करें ।

१४१. शादी के पहले तक के पूरे जीवन में सम्पूर्ण शुद्ध ब्रह्मचर्य पालें ।

१४२. किसी के भी साथ कुचेष्टाएं / कुकर्म / सृष्टिविरूद्ध कर्म / स्वलैंगिक संबंध / हस्तमैथून / या साधनों की सहायत से मैथून वृत्ति न सेवें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१४३. किसी का भी "कोमार्य भंग" न करें ।

१४४. महीने के शुक्ल या वद पक्ष में पूरा ब्रह्मचर्य पालें ।

१४५. "स्वपत्नी" (स्वपति) के साथ भी ५, १०, १२ तिथि / पर्व तिथि सुद्ध ब्रह्मचर्य पालें । अतिरेक – मर्यादा भंग न करें ।

१४६. गर्भ पंचेन्द्रिय जीव ही है अतः किसी भी संयोग में गर्भपात न कराएं / न करवाएं / न कराने की सलाह दें / न कराने हेतु लालच दें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१४७. फेमिलि प्लानिंग के साधन निरोधादि /
या कोई भी पद्धति न अपनाएं /
संयम का पालन करें / मर्यादा में रहें ।

१४८. निरोधादि / या गर्भपातक गोली –
दवाई–साधनों का व्यापार / लेन–देन
सर्वथा न करें ।

१४९. चोरी / जुगार (जुआं) / शिकार /
मदिरापन / परस्त्रीगमन / वेश्यागमन /
मांसभक्षणादि सप्त व्यसनों का सर्वथा
त्याग रखें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१५०. माहवारी (अंतराय) का पूरा पालन करते हूए रसोई आदि न करें / दर्शन–पूजा–दानादि न करें, ज्ञानादि न पढें, न लिखें ।

१५१. लोटरी न खरीदें, न बेचें, न भेट दें ।

१५२. कंपनीयों / फेक्टरीयों के शेयर खरिदने से महारंभ समारंभ–परिग्रह में सीधे भागिदार होते हैं । नरक गति मिलती है । अतः शेयर न खरिदें ।

१५३. हिंसा, जीव वध, प्राणी घातादि करने वाली कंपनियों में INVESTMENT न करें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१५४. बडे पैमाने के हिंसक कारखाने–कंपनी–फेक्टरीयों के शेयर न खरीदें ।

१५५. वेश्या / विधावा / दीन–दुःखी की वस्तु या धन व्याज पर न रखें गिरवी न रखें ।

१५६. सा / मटका / जूआं / फीचर आदि न करें / न कराएं ।

१५७. चुनाव / क्रिकेट / खेल / आदि प्रसंगों पर हार–जीत निमित्त रुपयै–पैसों की शर्त–बाजी न लगाएं / एवं न ही जुआं खेलें ।

१५८. किसी का ''मृत्यु भोज'' ग्रहण न करें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१५९. श्राद्ध नहीं मानना / न श्राद्ध हेतु दान देना / न कौऔं को बली–बाकले देना ।

१६०. कुंभ मेला, स्नान अथवा पुण्य हेतु गंगा, नदी, तलाब, में स्नानादि न करें ।

१६१. चमत्कारादि निमित्त अंधश्रद्धा से मिथ्यामत न मानें, न आचरें ।

१६२. किसी भी संयोगों में ‘‘धर्मपरिवर्तन’’ न करें / स्वधर्म न छोडें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१६३. जीलेटीन की केप्सुलें / फीश ओइल / कोडलीवर ओइल / लीवर एब्स्ट्रेक आदि युक्त दवाईयां / विटामिन एवं अण्डे के रस मिश्रित टॅनिक न लें ।

१६४. अभक्ष्य प्राणिजन्य सभी एलोपेथी दवाइयां सर्वथा न लें ।

१६५. अण्डे, अण्डे की बनी खद्य चीजें / सौंदर्य प्रसाधनें / टॅनिक / आदि का सर्वथा त्याग करें ।

१६६. बाजारू बिस्किट / क्रिम वाले बिस्किट / पीपरमेंट / टॅफी, चोकलेट, चिंगम आदि का सर्वथा त्याग करें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१६७. केक–ब्रेड–बटर आदि का सर्वथा त्याग करें ।

१६८. कल की बासी रोटी / शाक / दाल / चावल / फरसाण / आदि खाद्यचीजों सर्वथा न खाएं ।

१६९. परस्त्री कन्या / स्त्री / विधवा / आदि किसी पर बलात्कार, दुराचार न करें / न कराएं / न प्रोत्साहन दें ।

१७०. देर रात्री तक घर के बाहर भटकते न रहना ।

१७१. रेसकोर्स (अश्व दौड) आदि में न खेलें, न पैसे लगाएं, न धंधा करें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१७२. कुत्ते / बैल / संढ / मूर्ग / बकरे आदि पशुओं को लडाकर तमाशा (खेल) खडा न करें / न देखें, न पैसे लगाएं ।

१७३. पानी छानकर / एवं सीमित वापरना / निरर्थक न बहाएं ।

१७४. प्रतिदिन / या कभी स्वधर्मी – साधार्मिक बन्धु (एक या ज्याद) को अपने घर पर भोजन कराना / धन– धान्य – वस्त्रादि अर्पण कर सन्मान करना ।

१७५. वार्षिक बडे पर्वादि दिनों में रात को "संथारे" पर सोना ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१७६. वार्षिक पर्वादि बडे पर्वो में १, ५,
१०, २० आदि पौषध करने ।

१७७. वर्ष में १, ५, १०, २५, ५० बार
देशावकासिक व्रत का पालन करना ।

१७८. नित्य जिनवाणी श्रवणरुप व्याख्यानादि
श्रवाण करना चाहिए ।

१७९. यथाशक्ति वर्ष में १, ५, १०, २० बार
सही अर्थ में धन–धान्य–वस्त्र–आभूषणादि
अर्पण करते हुए संघ पूजन करना ।

१८०. यथाशक्ति वर्ष में २, ४ बार "स्वामी
वात्सल्य" करना चाहिए ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१८१. जीवन में कभी छोटा–बडा छीर पालित पैदल संघ निकालना ।

१८२. निरर्थक हंसी–मजाक न उडाना ।

१८३. निरर्थक गप्पे लगाकर समय व्यतीत न करना ।

१८४. देशकथा, भोजन कथा, राज्यचर्चा, स्त्रीकथादि ४ कथा न करें ।

१८५. ओघा–पात्रादि चारित्र के उपकरणों की घर में स्थापना करके (रोज) दर्शन करना ।

१८६. जिनमंदिर में दर्शन, पूजा विधिपूर्वक करते हुए १० त्रिक का पालना करें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१८७. जिनमंदिर से बहार निकलते समय प्रभु सन्मुख पीठ न करनी ।

१८८. स्त्रीयां फेशनेबल पद्धति से बाल न कटाएं, न बनाएं ।

१८९. आधुनिक फेशनवाले कपडे न पहने और न ही अंगोपांग दिखाएं ।

१९०. २४ भगवान के १२० कल्याणकों की आरधना करनी ।

१९१. पीने का पानी अथवा खद्य वस्तुएं झूंठी न करनी / झूठी करके न रखनी ।

१९२. भोजन के रसोईघर के वर्तनादि रातभर झूठे न रखें । कल पर न रखें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१९३. दीक्षा लेने के लिए तैयार हुए
दीक्षार्थी को रोकने हेतु अन्तराय न करें ।

१९४. कभी भी अपशब्द–गाली, अश्लीलगाली
गंदेशब्द का उपयोग न करें / न बोलें ।

१९५. धार्मिक, संसारिक, व्यापारिक आदि
बातों में जान्बूझकर झूठ न बोलें ।

१९६. धन–दौलन–संपत्ति / समाज, गाहने
आदि का समान भाग में बंटवारा करना ।

१९७. कोई भी वस्तु, पैसादि मालिक की
आज्ञा के बिना चोरी की बुद्धि से न लें ।

१९८ किसी भी वस्तु आदि छिपाकर मजाक
में दुसरों को परेशान न करें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

१९९. धर्मिक बातों को, झगडों को लेकर कोर्ट–कचेरी में न जाएं ।

२००. सामान्य बातों में क्रोधादि में किसी पर भी हाथादि न उठाएं ।

२०१. चातुर्मास काल में सिद्धाचल– सम्मेत शिखरजी आदि तीर्थों की यात्रा न करें ।

२०२. सोडा / कोका कोला / थम्स अप आदि पेय पदार्थों का सेवन न करें ।

२०३. चाय / काफ़ी आदि केफी पेय पदार्थों का त्याग करें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२०४. अपंग / विकलांग / शारीरिक क्षति वाले मूंगे–बहरे–तोतडे लोगों की हंसी / मजाक कर परेशान न करें ।

२०५. किसी के व्रत / नियम / प्रतिज्ञा जबरदस्ति न तोडें / तोडाएं ।

२०६. विषय वासना काम कथा प्रेरक–तेजक प्रेमवार्ता, सिनेमा, पिल्में देखनी नहीं, सूननी नहीं, वैसी बातें करनी नहीं ।

२०७. किसी के साथ विश्वासघात, दगा, न करें ।

२०८. किसी के साथ अबोला, अणबनाव न करें, न बढाएं ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२०९. स्त्रीयों के अंगोपांग, स्नानादि, रतिक्रीडा नहीं देखनी ।

२१०. भगवान, गुरूमहाराज, एवं स्वधर्म की निंदा–टीका न करें, न सुनें ।

२११. किसी के विषय में झूठी साक्षी न भरें, गलत सलाह न दें ।

२१२. झूठे दस्तावेज न लिखें ।

२१३. बिना नाम के अनामी पत्र न लिखें ।

२१४. धमाकी प्रधान पत्र न लिखें, किसी को मारने की धमकी न दें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२१५. चोर को आश्रय न दें। चोरी का माल न खरीदें। चोर को सहायता न करें, कहकर चोरी न करवाएं।

२१६. नारदी वृत्ति से किसी की बतें इधर उधर न करें।

२१७. मायावी–कपट वृत्ति की आदन न रखें।

२१८. किसी के पर झूठा आरोप–कलंक न लगाएं, आक्षेप न करें।

२१९. किसी को उल्टी पाटी न पढाएं, झूठा न सीखाएं।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२२०. काल्गुन चोमासी चौदश बाद ९ महीने भाजीपाला, सूका मेवा आदि का त्याग करें, (बदाम सिवाय)

२२१. किसी पर वैर–वैमनस्य दुश्मनि न बनाएं, न बढाएं ।

२२२. वडीलजनों का अनादर–अपमान–अविनय न करें, उद्धताई से न बोलें ।

२२३. ली हुई उधारी समयसर शिघ्र ही चुका देनी ।

२२४. किसी की रकम (थापण) हजाम न करें ।

२२५. देवद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, आदि धर्मादा द्रव्य का दुरुपयोग न करें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२२६. देवद्रव्य, ज्ञान्द्रव्य आदि की बोली की धर्मादा रकम जल्दी से भरें ।

२२७. देवद्रव्य, धार्मिक द्रव्यादि सात क्षेत्र के द्रव्य का उपयोग, व्यवस्था ट्रस्टी के रूप में यथायोग्य करें ।

२२८. धर्मस्थानों में सत्ता के संघर्ण के लिए गंदा राजकारण न खेलें ।

२२९. धार्मिक पाठशालाओं में पढने, पढाने, विकासार्थ जान ।

२३०. रास्ते चलते–फिरते निरर्थक पेड–पौधे, फल, कूल, पत्ते आदि न तोडें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२३१. शाक सब्जी आदि नौकर के बदले स्वयं ही जयणा पूर्वक समारें ।

२३२. अनाज, कठोल, आटा, वेसन आदि साफ बीन कर जीवजन्तु की रक्षा करके बाद में उपयोग में लें ।

२३३. धार्मिक रथायात्रा (वरघोडे) आदि में शिस्त पालते हुए साथ चलें ।

२३४. निरपराधी त्रस जीवों को मारने की बुद्धि से जानबूझकर न मारें ।

२३५. लग्न, मेच, हार–जीत, दीपाव्ली आदि प्रसंगो पर पटाखे (पटाकडे) सर्वथा न फोडें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२३६. व्यापार–धंधे में अच्छी वस्तु में खराबादि का भेलसेल–मिश्रण न करें ।

२३७. मोजशौक खातिर, घूमने–फिरने, समुद्रपार, विदेशों में न जाना । न व्यापार करता ।

२३८. नग्न, अर्धनग्न, नृत्य, नाटकादि भूलसे भी न देखें ।

२३९. धर में ओफिस–दुकान में नग्न, अर्धनग्न फोटु, चित्रादि सर्वथा न लगावें, न रखें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२४०. साल में १ बार पालीताणा आदि तीर्थों में जाकर अत्यन्त ऊंचे भाव से सधु–साध्वीजीयों की सुपात्रदान पूर्वक सेवा भक्ति करें ।

२४१. जीवन में एक छोटा सा या घार मंदिर बनाएं, पुत्रों को भी प्रेरणा देवें ।

२४२. पर्युषण महापर्व में ६४ प्रहरी पौषध करें ।

२४३. जीवन में १ बार या अधिक बार वर्षीतपादि बडी तपश्चर्या करें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२४४. धन, धान्य, वस्त्र, पात्र, वस्तु, नोकर, चाकर, दागिने आभुषाणादि को मर्यादा से भी ज्यादा रखकर अतिमूल्य संग्रह– परिग्रह न करें ।

२४५. वीशस्थानक तप (आयंबिल, उपवास, एकासणा) से करें ।

२४६. वर्धमान तप आयंबिल की ओलियां करें, कराएं ।

२४७. ज़ान, ज़ानोपकरण, ज़ान संबंधि है। पुस्तक के सामने पुरे ५१ खमासमण देकर ४१ माला गिनें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२४८. ज्ञान की पुस्तकों के पेपर–कागद से बच्चों के मलमुत्रादि न साफ करें एवं उसमें न खान, न खिलाना ।

२४९. जिनमंदिर के बर्तन, दीपक, धूप, पानी आदि कभी भी अपने घर न लाएं, अपने लिए न वापरें ।

२५०. स्त्रियों को, पुरूषों को जन्म मरण के सूतकों के नियम पालने चाहिए ।

२५१. मुस्लीम प्याउ पर पानी न पीएं ।

२५२. शरद पूर्णिमा आदि निमित्तों पर रात्री अन्न तथा खीरादि जांदनी में रखकर न खाएं / न बनाएं ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२५३. पशु–पक्षियों को भूखे, प्यासे, बांधकर न रखें, ज्यादाभार भरकर दौडाते ही न रखें, चाबुक न मारें ।

२५४. झींगर, चिंटी, मकोडे, जू / इयल (लट) लीख, दीमक, मच्छर आदि जीवों को दवाई से न मारें, वैसे भी न मारें, पेस्ट कंट्रोल न कराएं, न मारक दवाई छिडकें ।

२५५. हिंसाजन्य प्योर सिल्क न पहनें, सिल्क बनाना, बेचना आदि व्यापार न करें ।

२५६. किसी की रहस्यात्मक गुप्त बातों को प्रकट न करें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२५७. किशी भी पक्षी के अण्डे न फोडें,
बच्चों / अण्डों को स्थानान्तर न करें ।
मां–बच्चों का वियोग न कराएं ।

२५८. मनदुःख हो या बने वैसी भाषा, वचन,
शब्द न बोलें ।

२५९. देश–विदेश में दानचोरी SMUGLING में
वस्तु की हेरा–फेरी न करें ।

२६०. पराए व्याव–शादी–सगाई न जोडें, न
कराएं ।

२६१. दईज न मांगे, न दें, न स्वीकारें । दहेज
के कारण स्त्री को जलाना–मारना नहीं ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२६२. दुसरी शादी न करें, दो पत्नी न रखें, पत्नी–प्रेयसी दोनों न रखें, समूह लग्न न योजें ।

२६३. विधवा विवाह न करें, न कराएं, बाल लग्न न कराएं ।

२६४. तलाक न लें, कोर्ट कचेरी में न जाएं ।

२६५. होली न मनाएं, रंग न खेले, स्त्रीयों के साथ रंग न खेलें ।

२६६. निश्चित उम्र के बाद दूसरों की शादी में भी न जाएं ।

२६७. ग्राहण किये हुए ''परिग्रह परिमाण'' नियम–व्रत का पालन करें ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२६८. क्लब में न खेलें, क्लब में कभी न जाएं, न सभ्य बनें ।

२६९. लग्न–शादी आदि प्रसंगों पर केबरे डान्सादि न योजें, शराब की पार्टियां न योजें, न जाएं ।

२७०. लग्न–शादी आदि प्रसंगो पर मांसाहारी वेराइटीयां न बनाएं । न खाएं, न खिलाएं । न शराब पिलाएं/न पीएं ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

२७१. फटाके का व्यापार न करें / दुकान न लगाएं / न फोडें ।

२७२. हिंसा की प्रवृत्ति / वृद्धि करने वाली कंपनीयों के शेयर न खरीदें / न पैसे रोकें ।

२७३. कर चोरी न करें / समयपर कर भरते रहें ।

२७४. ब्लुफिल्में, गंदे–अश्लील गंदे साहित्य मेगेजीनों की बिक्री, खरीदी न करें / एसी लायब्रेरी न चलाएं ।

कालमर्यादा	नियम में छूट

नियमों–प्रतिज्ञाओं जिसमें किसी भी प्रकार से दोष लग जाय तो उन्हें लिखकर रखें ।

नियमों में लगेहुए दोषों को गुरूदेव को दिखा कर जो योग्य प्रायश्चित दिया जाता है उसके लिए गुरू के पास यहां प्रायश्चित लिखाने के लिए -----

प्रभु वीतराग स्वामी ।
यह प्रार्थना है मेरी ।।
मैं निज स्वरुप पाऊं,
पाऊं दशा तुम्हारी ।।

With best compliments from

Leeladevi Sampatraj Bagrecha Jinani Charitable Trust (Regd.)

No. 17/1, "Leela", North Square Road, Basavanagudi South,
Bangalore - 560 004. Mobile : 9900032201
E-mail: sampatrajbagrecha12@gmail.com